शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2014

भारती एयरटेल लिमिटेड की लाभदेयता प्रवृत्ति का विश्लेषणात्मक अध्ययन

*डॉ.आशीष पाठक, **डॉ.वासुदेव मिश्रा, ***सारिका साहू
*प्राध्यापक वाणिज्य, श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
*प्राचार्य, श्री क्लाथ मार्केट इंस्टिट्यूट आफ प्रोफेशनल स्टडीज
***अतिथि व्याख्याता, श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारती एयरटेल लिमिटेड के विगत 5 वर्षों के आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं कि संस्था की लाभार्जन स्थिति अच्छी नहीं है। भारती एयरटेल के मुनाफे में गिरावट का सिलसिला जारी है। जिसका प्रमुख कारण अतिपूंजीकरण है अर्थात् व्यापार में विनियोजित पूंजी की मात्रा अत्यधिक है और संस्था अपनी विनियोजित पूंजी का सही तरीके से उपयोग करने में असफल रही है जिसके कारण व्ययों में वृद्धि हो रही है व लाभों में कमी आ रही है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसका विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

सार्थक चिन्हों द्वारा सूचनाओं का आदान-प्रदान करने की प्रक्रिया को "संचार" कहते है। वर्ष 1985 तक देश में दूरसंचार संबंधी सभी सेवाएँ सरकार के दूरसंचार विभाग द्वारा प्रदान की जाती थी। दूरसंचार संबंधी नीतियाँ बनाने और उन्हें लागू करने संबंधी सभी कार्य इसी विभाग द्वारा किये जाते थे।

नई औद्यौगिक नीति 1991 के प्रावधानों के परिणाम स्वरूप सरकार द्वारा दूरसंचार क्षेत्र को निजी निवेश के लिए खोल दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप दूरसंचार व्यवसाय में कई निजी कंपनियों ने जैसे कि टाटा इंडिकाम, रिलायंस, हच, एयरटेल, आइडिया आदि ने उच्च संभावना वाले भारतीय दूरसंचार बाजार में सफलता पूर्वक प्रवेश किया।

भारती एयरटेल लिमिटेड जिसे पहले भारती टेलीवेंचर उद्यम लिमिटेड़ के नाम से जाना जाता था, वर्तमान में भारत की एक सर्वाधिक सफल निजी बहुराष्ट्रीय कंपनी है। यह अपनी दूरसंचार सेवाएँ एयरटेल के ब्रांड नाम से प्रदान करती है। भारती एयरटेल लिमिटेड भारत में ग्राहको की संख्या की द्रष्टि से दूरसंचार सेवा प्रदान करने वाली भारत की सबसे बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनी है, जिसकी ग्राहक संख्या वर्ष 2013 के अंत तक 269 करोड थी। भारती एयरटेल लिमिटेड की स्थापना 7 जुलाई 1995 को हुई, जिसका मुख्यालय भारत में नई दिल्ली में है। यह अपने ब्रांड नाम एयरटेल मोबाइल सर्विसेज के नाम से जीएसएम प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए

ब्राडबैंड, दूरसंचार सेवाएँ, स्थिर लाइन, इन्टरनेट कनेक्टीविटी, लंबी दूरी की सेवाएँ तथा उद्यम सेवाएँ उपलब्ध कराती है।

भारती एयरटेल लिमिटेड भारत में ग्राहको की संख्या की दृष्टि से मोबाइल सेवा प्रदान करने वाली सबसे बड़ी कम्पनी एवं स्थिर लाईन सेवा प्रदान करने वाली दूसरी सबसे बडी कम्पनी है। भारती एयरटेल लिमिटेड, भारत की प्रथम दूरसंचार सेवा प्रदान करने वाली कंपनी है जिसे 'सिस्को गोल्ड सर्टीफिकेशन' प्राप्त है। यह कम्पनी ग्राहको को अपनी ओर आकर्षित करने हेतु अच्छी योजनाएँ और ग्राहक सेवाऐं दे रही है।

साहित्य पुनरावलोकन

निधि अग्रवाल, नीरज कुमार और निशीत साहू (2008), ने एयरटेल की वित्तीय स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए भारती एयरटेल लिमिटेड की वित्तीय स्थिति का उनकी प्रतियोगी कंपनियों बीएसएनएल व वीएसएनएल के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया है। जिसके आधार पर उन्होंने पाया कि संस्था की लाभार्जन क्षमता वर्ष 2005 में 15.24 प्रतिशत थी वह वर्ष 2007 में बढ़कर 22.67 प्रतिशत हो गयी है। संस्था की दीर्घकालीन व अल्पकालीन शोधन क्षमता में भी वृद्धि हुई है।

अंकित यादव (2010), ने अपने शोध द्वारा भारती टेलिवेंचर लिमिटेड की विज्ञापन संबंधी व्यूहरचना का अध्ययन किया है। अध्ययन के आधार पर उन्होंने पाया कि एयरटेल के विज्ञापन अपने ग्राहको को बहुत अधिक प्रभावित करते हैं। लोगों को उनकी योजनाएँ बहुत पसंद आती हैं। एयरटेल अपने सेलिब्रिटी विज्ञापानों के माध्यम से विस्तृत बाजार क्षेत्र को अधिग्रहित करने में सक्षम हो पाया है।

दैनिक भास्कर (07 नव.2012), के आर्टिकल 'लगातार 11वीं तिमाही में घटा एयरटेल का मुनाफा' के अनुसार दूरसंचार क्षेत्र की प्रमुख कंपनी भारती एयरटेल का चालू वित्त वर्ष की सितंबर में समाप्त दूसरी तिमाही का शुद्ध लाभ 29.7 फीसद घटकर 721.2 करोड़ रुपये रह गया है। यह लगातार 11वीं तिमाही है जबकि कंपनी के शुद्ध लाभ में गिरावट आई है।

दैनिक भास्कर (02 फर. 2013), के आर्टिकल 'एयरटेल के लाभ में कमी बदस्तूर जारी' के अनुसार देश की सबसे बड़ी निजी दूरसंचार सेवा प्रदाता कंपनी भारती एयरटेल के मुनाफे में गिरावट का सिलसिला जारी है। चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही यानी अक्टूबर-दिसंबर 2012 को मिलाकर लगातार 12वीं तिमाही में एयरटेल के मुनाफे में कमी हुई है। चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में कंपनी का कंसोलिडेटेड शुद्ध मुनाफा 72 फीसदी गिरकर महज 284 करोड़ रूपये रह गया।

हिन्दुस्तान टाइम्स (25 जून 2013), के आर्टिकल 'सरकार ने दी भारती एयरटेल पर 650 करोड़ रूपये के जुर्माने की मंजूरी' के अनुसार वर्ष 2002 से 2005 के बीच एयरटेल ने अपने रोमिंग वाले ग्राहको को नेशनल और इंटरनेशनल काल लोकल काल की तरह पहुँचाए थे, जबकि विभाग ने कंपनी से वर्ष 2003 में ही ऐसा करने से मना किया था। एयरटेल की इस चतुराई से सरकारी खजाने और सार्वजनिक कंपनी बीएसएनएल को भारी नुकसान उठाना पड़ा था। टेलीकाम मंत्री कपिल सिब्बल ने 'रोमिंग' नियमों के उल्लंघन अर्थात सब्सक्राइबर लोकल डायलिंग (एसएलडी) मसले पर 650 करोड़ रूपये की पेनल्टी भारती एयरटेल पर लगाने को मंजूरी दी।

दैनिक भास्कर (05 जुलाई 2013), के आर्टिकल 'एयरटेल ने बढ़ाया दायरा, क्वालकाम के 4 ब्राडबैंड में बढ़ाई हिस्सेदारी' के अनुसार दूरसंचार कंपनी भारती एयरटेल ने भारत में क्वालकाम की सभी चारों ब्राडबैंड वायरलेस सेवा इकाईयों में अपनी दो-दो फीसद की अतिरिक्त हिस्सेदारी हासिल कर ली है। क्वालकाम में हिस्सेदारी बढ़ाने की खबर के बाद बंबई शेयर बाजार में भारती एयरटेल का शेयर 2.34 फीसद की तेजी के साथ 301.15 रुपये पर पहुंच गया।

उपर्युक्त शोध पत्रों का अवलोकन करने पर हमें भारती एयरटेल लिमिटेड की आर्थिक एवं वित्तीय स्थिति, प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति व उपभोक्ता प्रतिक्रिया आदि के सबंध में जानकारी प्राप्त हुई है।

परिकल्पनायें

विषय से संबंधित परिकल्पनायें निम्नलिखित हैं :

1. भारती एयरटेल लिमिटेड की लाभार्जन क्षमता घटती जा रही है।
2. भारती एयरटेल लिमिटेड़ के लाभो मे कमी का प्रमूख कारण प्रतिस्पर्धा व ब्याज लागतों का बढ़ना है।

विषय से संबंधित शोध के उद्देश्य निम्नलिखित हैः-

1. भारती एयरटेल लिमिटेड की लाभदेयता प्रवृत्तियों का अध्ययन करना।
2. भारती एयरटेल लिमिटेड की गिरती लाभदेयता के कारणों का अध्ययन करना।
3. भारती एयरटेल लिमिटेड की लाभदेयता वृद्धि के संबंध में सुझाव देना।

शोध प्रविधि

'भारती एयरटेल लिमिटेड की लाभदेयता प्रवृत्ति का विश्लेषणात्मक अध्ययन' विषय पर जो शोध पत्र निर्मित किया गया है, वह मुख्यतः द्वितीयक समंको पर आधारित है। यह समंक संस्था द्वारा तैयार किये गये लेखों, अधिकृत वेबसाइट, पुस्तकों, समाचार पत्र-पत्रिकाओं, इन्टरनेट आदि के माध्यम से एकत्रित किये गये हैं। इस प्रकार एकत्रित समंको का संकलन, वर्गीकरण एवं विश्लेषण किया गया है।

लाभदेयता विश्लेषण की वैसे तो कई विधियां हैं, जिनमें से अनुपात विश्लेषण विधि का प्रयोग कर लाभदेयता का अध्ययन व विश्लेषण किया गया है और उसके आधार पर प्राप्त निष्कर्षो का निर्वचन किया गया है।

लाभदेयता प्रवृत्ति का विश्लेषण

यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि प्रत्येक व्यावसायिक संस्था का प्राथमिक एवं सर्वोपरि उद्देश्य लाभ कमाना होता है। व्यवसाय में लाभार्जन करना उसे जीवित बनाये रखने व उसे सुचारु रुप से चलाये रखने के लिए आवश्यक होता है। व्यवसाय की समग्र कार्य कुशलता की माप करने के लिए लाभदायकता का विश्लेषण किया जाता है। लाभदायकता अनुपातों के आधार पर भारती एयरटेल लिमिटेड की लाभदायकता का विश्लेषण इस प्रकार है:-

1. शुद्ध लाभ अनुपात

शुद्ध लाभ अनुपात शुध्द विक्रय के प्रतिशत के रूप में शुध्द लाभ एवं शुध्द विक्रय के मध्य सम्बन्ध स्थापित करता है। शुध्द लाभ में संचालन एवं गैर-संचालन लाभ दोनों ही सम्मिलित होते हैं। अतः इस अनुपात की गणना द्वारा संस्था की सम्पूर्ण क्रियाओं की कुशलता की जांच की जा सकती है।

इस अनुपात की गणना निम्न सूत्र द्वारा की जाती है

Net Profit Ratio = Net Profit * 100
Net Sales

वर्ष	शुद्ध लाभ	कुल आय	शुद्ध लाभ अनुपात
2008-09	78590	373521	21.04
2009-10	89768	418948	21.43
2010-11	60467	595383	10.16
2011-12	42594	714508	1.96
2012-13	22757	803112	2.83

स्रोत:- भारती एयरटेल लिमिटेड द्वारा प्रकाशित लेखों पर आधारित।

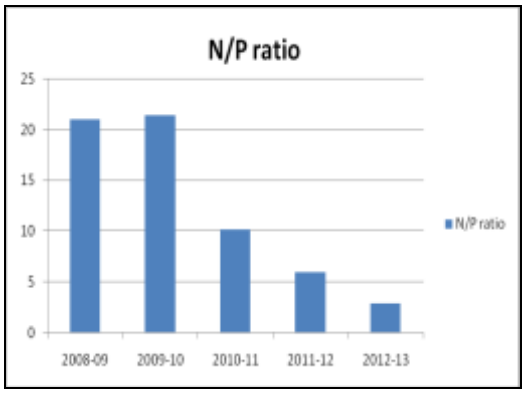

निर्वचन

शुद्ध लाभ अनुपात जितना अधिक होता है, व्यावसायिक संस्था की लाभदायकता एवं कार्यक्षमता उतनी ही अधिक होती है। इसके विपरीत यह अनुपात जितना ही कम होता है, संस्था की लाभदायकता एवं कार्यक्षमता उतनी ही कम मानी जाती है।

उपर्युक्त तालिका के अनुसार भारती एयरटेल लिमिटेड का शुद्ध लाभ अनुपात वर्ष 2008-09 में 21.04 प्रतिशत था जो कि लगातार घटते हुए वर्ष 2012-13 में 2.83 प्रतिशत हो गया।

इससे स्पष्ट होता है कि संस्था की लाभार्जन क्षमता वर्ष-प्रतिवर्ष घटती जा रही है। जिसका प्रमुख कारण संस्था के शुद्ध लाभ का लगातार घटते जाना व व्ययों का तुलनात्मक रूप से घटने के बजाय बढ़ना है।

2. विनियोग पर प्रत्याय:-

यह अनुपात शुद्ध लाभ व व्यवसाय में विनियोजित पूंजी के मध्य सम्बन्ध प्रकट करता है। यहाँ शुद्ध लाभ से आशय ब्याज, कर व लाभांश देने के पूर्व के लाभ से है एवं विनियोजित पूंजी से आशय दीर्घकालीन कोषों से है जिसमें समता अंश, पूर्वाधिकार अंश, संचित लाभ, संचय, दीर्घकालीन ऋण, ऋणपत्र, बंधक पर ऋण आदि को सम्मिलित किया जाता है।

इस अनुपात की गणना हेतु निम्न सूत्र का प्रयोग किया जाता है:-

R. O I. = Profit before Interest, Tax & Dividend* 100
Capital Employed

वर्ष	शुद्ध लाभ	कुल आय	शुद्ध लाभ अनुपात
2008-09	78590	373521	21.04
2009-10	89768	418948	21.43
2010-11	60467	595383	10.16
2011-12	42594	714508	1.96
2012-13	22757	803112	2.83

स्रोत:- भारती एयरटेल लिमिटेड द्वारा प्रकाशित लेखों पर आधारित।

निर्वचन:-

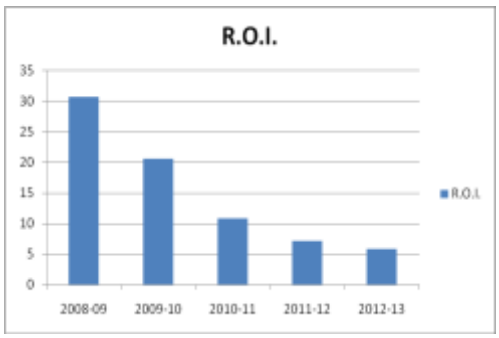

संस्था की सम्पूर्ण लाभदायकता की जांच करने के लिए विनियोजित पूंजी पर प्रत्याय की गणना की जाती है। इस अनुपात से यह प्रकट होता है कि संस्था में ऋणदाताओं एवं स्वामियों द्वारा प्रदत्त कोषों का कितना कुशलता के साथ प्रयोग किया गया है। उपर्युक्त तालिका के अनुसार संस्था का विनियोग पर प्रत्याय अनुपात वर्ष 2008-09 में 30.69 प्रतिशत था जो कि वर्ष 2012-13 में लगातार घटते हुए 5.80 प्रतिशत हो गया है। जिससे स्पष्ट होता है कि संस्था व्यापार में विनियोजित पूँजी का कुशलतापूर्वक उपयोग नहीं कर पा रही है और इस प्रकार संस्था अतिपूंजीकरण की समस्या से ग्रस्त है। जिसके कारण ऋणदाताओं व अंशधारियों को उनके द्वारा प्रदत्त कोषों पर उचित प्रत्याय प्राप्त नहीं हो पा रहा है।

3. प्रति अंश अर्जन:-

समता अंशधारियों को लाभांश का वितरण पूर्वाधिकार अंशधारियों को लाभ का वितरण करने के पश्चात किया जाता है। समता अंशों के लिए उपलब्ध शुद्ध लाभ को उनकी संख्या से भाग देने पर प्रति अंश आय ज्ञात की जाती है।

प्रति अंश आय की गणना निम्न सूत्र द्वारा की जाती है -

E. P. S. = N. P. after Tax, Interest & Pref. Divi. * 100 / Number of Equity Share

वर्ष	ब्याज कर व पूवाधिकारी लाभांश पश्चात लाभ	समता अंशों की संख्या	प्रति अंश अर्जन
2008-09	78590	3796	20.7
2009-10	89768	3796	23.67
2010-11	60467	3796	15.93
2011-12	42594	3796	11.22
2012-13	22757	3796	6.00

स्रोत:- भारती एयरटेल लिमिटेड द्वारा प्रकाशित लेखों पर आधारित।

निर्वचन

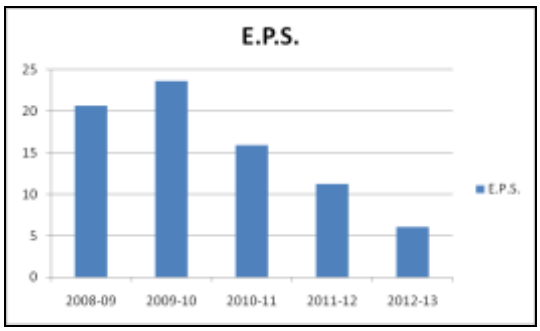

प्रति अंश आय की गणना से इस बात की जानकारी मिलती है कि समता अंशधारियों को प्रति अंश कितनी आय प्राप्त होगी। इसी कारण यह अनुपात जितना अधिक होता है, व्यवसाय उतना ही अधिक कुशल व लाभप्रद माना जाता है।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि संस्था की प्रति अंश आय वर्ष 2008-09 में 20.7 प्रतिशत थी, जो कि वर्ष 2012-13 मे घटते हुए 6.00 प्रतिशत रह गयी है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि समता अंशधारियों को प्राप्त होने वाली आय वर्ष-प्रतिवर्ष घटती जा रही है। जिसका प्रमुख कारण कंपनी के शुद्ध लाभ में गिरावट है।

समस्याएं -

उपर्युक्त शोध कार्य द्वारा संस्था की लाभार्जन प्रवृत्ति के संबंध में निम्नलिखित तथ्य ज्ञात हुए:-

1. संस्था का लाभ वर्ष-प्रतिवर्ष घटता जा रहा हैं।
2. संस्था के लाभों में कमी का प्रमुख कारण संस्था के शुद्ध लाभ का कम होना व व्ययों में वृध्दि होना है।
3. संस्था व्यापार में विनियोजित पूंजी का कुशलतापूर्वक उपयोग करने में सक्षम नहीं है।
4. ब्याज लागत ऊंची रहने, फारेन एक्सचेंज दरों में अस्थिरता तथा टेक्स प्रावधानों में खर्च के चलते संस्था के लाभों मे कमी आ रही है।
5. संस्था की प्रति अंश आय कम होने के कारण संस्था के अंशों का बाजार मूल्य भी घटता जा रहा है।
6. संस्था द्वारा बड़ी मात्रा मे कर चुकाया जाता है, इससे संस्था की आय मे कमी आ रही है।
7. संस्था में स्थायी सम्पत्तियाँ बहुत ज्यादा हैं, जिसका प्रभाव संस्था के लाभ पर पड़ता है।
8. संस्था को अन्य प्रायवेट कंपनियों व मल्टीनेशनल कंपनियों से मिल रही कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है।

सुझाव

उपर्युक्त शोध कार्य के आधार पर संस्था की लाभार्जन क्षमता में वृद्धि के संबंध में निम्नलिखित सुझाव दिये जा सकते हैं:-

1. संस्था को व्यापार में विनियोजित पूंजी का सदुपयोग करना चाहिए जिससे आय में वृद्धि हो व व्ययों में कमी आए।
2. संस्था को ग्राहक सन्तुष्टि पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।
3. संस्था को अपनी सेवाओं के संर्वद्धन हेतु बेहतर व आकर्षक तरीकों का प्रयोग करना चाहिए।
4. संस्था को विकास हेतु सुनियोजित प्रयास करना चाहिए।
5. संस्था को अपने कर्मचारियों पर व उनकी कार्यनिष्पादन गतिविधियों पर नजर रखनी चाहिए।
6. संस्था को अनुपयोगी व बेकार पड़ी सम्पत्तियों का विक्रय कर अपनी स्थिति सुदृढ़ करनी चाहिए।

निष्कर्ष

भारती एयरटेल लिमिटेड के विगत 5 वर्षों के आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं कि संस्था की लाभार्जन स्थिति अच्छी नहीं है। भारती एयरटेल के मुनाफे में गिरावट का सिलसिला जारी है। जिसका प्रमुख कारण अतिपूंजीकरण है अर्थात् व्यापार में विनियोजित पूंजी की मात्रा अत्यधिक है और संस्था अपनी विनियोजित पूंजी का सही तरीके से उपयोग करने में असफल रही है जिसके कारण व्ययों में वृद्धि हो रही है व लाभों में कमी आ रही है। संस्था के लाभों में कमी का एक अन्य महत्वपूर्ण कारण प्रतिस्पर्धा है। भारती एयरटेल लिमिटेड को दूरसंचार क्षेत्र की अन्य निजी एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियों से मिल रही कड़ी प्रतिस्पर्धा

का सामना करना पड़ रहा है। ये निजी कंपनियां ग्राहकों को अच्छी किस्म की सेवाओं व आकर्षक टैरिफ प्लान द्वारा अपनी ओर आकर्षित करने में सफल रही है। अगर संस्था अपने द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं व ग्राहक सन्तुष्टि पर पर्याप्त ध्यान दे व व्ययों को कम करने का प्रयास करे तो संस्था अपनी लाभार्जन क्षमता में सुधार कर सकती है और यह संस्था के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए भी अत्यन्त आवश्यक है।

Reference

1 Agarwal Nidhi, Sahu Nishith and Niraj Kumar (2008), "Airtel financial analysis" (http://PAKISTANMBA, JIMDO.COM).
2 Gupta, Dr. S.P., "Accounting for Managerial Decisions" Sahitya Bhawan Publications, Agara (2006)
3 Kothari, "Research Methods" Sahitya Bhawan Publications, Agara
4 Mukharji, Ravindra "Research and Discover" Jwahar Book Dipo, Mathura
5 Sharma, Dr. Rajendra, Trivedi, Dr. Pankaj "Management Accounting" Devi Ahilya Prakashan, Indore (2005)
6 Shukl, Dr.S.M. Sahay, Dr. S.P., "Statistical Analysis" Sahitya Bhawan Publication, Agara (2002)
7 Solanki, M.K., "Research Methods" Madhav Prakashan, Agara (2012).
8 Yadav, Ankit (2010), "Advertising strategy of Bharati Televentures LTD"PGDMF0908, PGDM (m).

NEWS PAPER AND MAGZINES:-

1 Hindustan times
2 Times of India
3 Dainik Bhasker

WEBSITES:-

1 www.airtel.co.in
2 www.dot.gov.in
3 WWW.TRAI.CO.in